PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 5

राष्ट्र और समाज के संदर्भ में आम्बेडकरवादी चिंतन

प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजरी - शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
पाचवड ता. वाई, जि. साजारा
महाराष्ट्र (भारत)

---

14 अप्रैल बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस के रूप में भारत सहित सम्पूर्ण विष्व में बडी धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष उनके 126 वें जन्म दिवस को समानता–सामाजिक न्याय, भेदभाव रहित समाज की स्थापना के संकल्प के साथ देष तथा विदेषों में मनाया गया। डॉ. अम्बेडकर के सामने मूल प्रष्न था कि समाज में दुख और शोषण क्यों है ? तथा उसे किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने भारतीय सामाजिक व्यवस्था के देष को जीवन पर्यंत झेला था और इसलिये उन्होंने दलित समाज के उत्थान के लिये सभी स्तर पर कार्य किये। आत्म सम्मान, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक दायित्व पर उन्होंने अधिक बल दिया जिससे राष्टीय एकता और सामाजिक सुदृढता मजबूत हो सकी। उन्होंने सदैव उन विचारों तथा संस्थाओं का समर्थन किया जिससे स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व की भावना बढे।

वे चाहते थे कि समाज मानवीय व्यवस्था के अधिक निकट हो। आदमी–आदमी के बीच व्यवहारिक संबंध और प्रगाढ हो, चूंकि यही समाज की अच्छी व्यवस्था का उदाहरण है। न्याय, समता, भ्रातृत्व, स्वतंत्रता और निर्भयता बाबा साहेब के जीवन के आदर्ष रहे है। उन्होंने बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के जरिए संविधान देकर भारत को एक खुषहाल राष्ट्र बनाने का प्रयत्न किया।

सामाजिक न्याय को समाज में प्रभावी होने के लिये लोगों में भाईचारे की भावना का पाया जाना बहुत जरूरी है। वास्तव में हमारा व्यवहार दो प्रकार की शक्तियों से संचालित होता है। एक है व्यक्तिगत स्वार्थ और दूसरा है भ्रातृत्व भाव। दोनों एक–दूसरे के विपरीत है पहला भाव निजी स्वार्थ की पूर्ति पर बल देता है। भले ही इससे दूसरों के हितों को क्षति पहुंचती हो जबकि दूसरा भाव अपने स्वार्थ की पूर्ति करते समय दूसरों के हित की रक्षा किये जाने पर भी जोर देता है। विकसित रूप में भ्रातृत्व भाव दूसरों के हितों की रक्षा के लिये अपने हितों की तिलांजलि देना है। इस प्रकार भ्रातृत्व–मैत्री भाव का दूसरा नाम

है। यह ऐसी भावना है जो व्यक्ति को दूसरों की भलाई के साथ जोडती है। उनका मानना है कि दूसरों के हित के लिये भी व्यक्ति को वैसे ही कार्य करना चाहिए जैसा कि वह अपने हित की पूर्ति के लिये करता है। इसी भावना से प्रेरित होकर व्यक्ति दूसरों को अपना प्रतिस्पर्धी मानकर उन्हें पराजित देखना नही चाहता। व्यक्तिवाद अराजकता को जन्म देता है। यह केवल भ्रातृत्व भाव ही है जो नैतिक व्यवस्था को बनाये रखने में मदद करता है।

बाबा साहब ने 18 जुलाई 1942 को कहा था–हमारी लडाई सत्ता और सम्पत्ति की नही है, अपितु आजादी के लिए है। आज भी दलित–वंचित–पिछडों पर होने वाले अत्याचार बताते है कि देष आजाद होने के बावजूद वे आजाद नहीं है। जब–तब सांस्कृतिक वर्चस्व की द्विज मानसिकता और भू–स्वामी जातियों द्वारा प्रयोजित जातिवाद रहेगा तब तक देष में सामाजिक न्याय के संवैधानिक प्रावधनों की पुर्णता संदिग्ध बनी रहेगी। दुसरा, बाबासाहब द्वारा प्रारंभ की गई आजादी की लडाई अभी पूर्ण नहीं हुई है। उनकी दृष्टी में नागरिक समाज की अवधारणा को चरितार्थ करने के लिए यह आवष्यक है कि बहुजनों को सभी क्षेत्रों में समुचित प्रतिनिधित्व मिले, इनमें राजनितिक नेतृत्व विकसित हो। प्राथमिक षिक्षा के अधिकार को ईमानदारी से लागू किया जाए। महिला आरक्षण के पिछडें वर्ग के साथ–साथ मुस्लिम धर्म व अन्य अल्पधारक वर्ग की महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया जाए।

अम्बेडकरी विचारधारा आज भी प्रासंगिक है और तब तक रहेगी जब तक सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो जाती। अतः समाज को आधुनिक व लोकतांत्रिक बनाने के लिए हमें महानतम भारतीय बौद्विसत्व बाबा साहेब डॉ. भिमराव अम्बेडकर के दिखाए मार्ग का अनुकरण करना चाहिए और इसके लिए सभी सत्ताओं को अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना समय की मांग है।

राष्ट्र गौरव विष्व प्रसिध्द चिंतक एवं विधिवेत्ता हमारे बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि जातिवाद के कारण ही भारत में राष्ट्र भावना नहीं पनप पाई और भारत का सपना देख जो समृध्द हो, शक्तिषाली नहीं बनाया जा सकता, उनके शब्दों में यदि कहा जाए कि भारत के समृध्द और विकसित होने में जाति–व्यवस्था बहुत बडी रुकावट रही है तो इसमें काई अतिषयोक्ति नहीं होगी।

हमें एक ऐसी संस्कृति का विकास करना चाहिए जिसमें प्रत्येक देषवासी को एक सम्मानित नागरिक माना जाए और प्रत्येक नागरिक को मानवीय गरिमा और आत्म सम्मान के साथ जीने का अवसर सुनिष्चित हो तथा देष में परस्पर भाईचारे के साथ प्रेम और सौहार्द्र की भावना हो। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के राष्ट्र निर्माण की प्रतिबध्दता को उपर्युक्त वाक्यों से बखूबी समझा जा सकता है जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अंतर भुलाकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए। राष्ट्र के संदर्भ में

राष्ट्रीयता का अर्थ सामाजिक एकता में दृढ भावना एवं अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में इसका आधार भाईचारा होना चाहिए।

जाति व्यवस्था श्रम विरोधी है, जाति की प्रकृति ही विखण्डन और विभाजन करना है। जाति का यह अभिषाप है। डॉ. अम्बेडकर का कहना था कि जातीय भावनाओं के कारण आर्थिक विकास रुकता है। इससे वे स्थितियॉ पैदा हो जाती है जो कृषि तथा अन्य क्षेत्र में सामुहिक प्रयत्नों के विरुध्द है। जाति–पाति के रहते ग्रामीण विकास समाजवादी सिध्दांतों के विरुध्द रहेगा। इसलिए जातिवाद के कारण ही बडे–बडे गढ बन गए है, उनहें तोडा जाए, जिससे शहरों और गावों में तेजी से विकास हो। इसलिये डॉ. अम्बेडकर का लगातार यह प्रयत्न रहता था कि भारत में एक ऐसी झासी संस्कृति का निर्माण हो जिसमें जात–पात के आधार पर लोगों के साथ अन्याय और शोषण न हो और हर नागरिक अपनी क्षमताओं के अनुसार राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सके।

डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए अपने भाषण में कहा था–भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने के लिये यह आवष्यक है कि हम संविधानवाद की भावना विकसित करें और संविधानेत्तर तरीकों को जल्दी तिलांजली दे दें।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक, राजनीतिक एवं सास्कृतिक चिंतन यथार्थपरक और मानवता के लिये था। समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, गरिमा, आत्म–सम्मान एवं न्याय उनके दर्षन का मुख्य लक्ष्य रहा है। जिसके लिये उन्होंने ऐसी सामाजिक संरचना की संकल्पना की जिसमें मनुष्य को अपना सर्वांगीण विकास करने का अवसर प्राप्त हो। जिसके बाद एक ऐसा समृदध भारत का निर्माण हो ताकि समाज में जाति, सम्प्रदाय या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव न हो। सभी को समान अवसर प्रप्त हो, गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करने का वातावरण हो। यहॉ यह बताना समोचीत होगा कि समाज के सभी वर्गों के विकास के बगैर किसी राष्ट्र की संकल्पना ही बेमानी है।

तकरिबन 35 वर्षों के बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने शोसियो–पोलिटिकल–कल्वरल एक्टिविजम अर्थात सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कर्म के बियावान में विचरण करते हुए उन्होंने समाज के सभी वर्गो के उत्थान के लिए कार्य किया।

भारत के इतिहासकारों ने डॉ. अम्बेडकर को वह स्थान नहीं दिया जिसके वे हकदार है। इसका कारण कुछ भी हो सकता है पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इसका कारण एक ही है और वह है उनका दलित वर्ग में जन्म लेना। मुझे इसमें इतिहासकारों की सवर्ण मानसिकता दिखती है। अपवाद स्वरूप एकाध इतिहासकार ने डॉ. अम्बेडकर को दलित नेता और दलित के संघर्ष के अग्रदूत के रूप में स्थापित करने तथा उन्हें दलितों तक ही सीमित कखने की संपूर्ण कोषिष की तथा उन्हें संविधान निर्माता के रूप में ही आज तक दर्षाया जाता है परन्तु बाबा साहेब के अंदर बहुत से ऐसे गुण थे, जिसे समाज के सामने लाया ही नहीं गया और वह है उनका आर्थिक चिंतन क्योंकि यहां फिर उनका दलित होना

उनके लिए अभिषाप बन जाता है क्योंकि भारतीय समाज में जाति प्रथा लोगों के रग–रग में खून के कतरे की तरह बह रही है।

वैसे तो इतिहास की किसी भी घटना के बारे में किसी भी प्रकार का तर्क दिया जा सकता है। इतिहास में घटित घटनाओं की मीमांसा अनेक प्रकार से हो सकती है यदि ऐसा होता तो क्या होता यदि वैसा होता तो क्या होता ? यह मूलतः व्यर्थ की वैचारिक जुगाली के अलावा कुछ नहीं। परन्तु बाबा साहेब का सवाल है कि कुछ बुनियादी तथ्यों को याद रखा जाना आवष्यक है।

आर्थिक पहलुओं पर उनके विचारों को इतिहासकारों ने ज्यादा महत्व नहीं दिया। फिर भी उन्होने समय–समय पर अपनी अर्थव्यवस्था संबंधी लेखों को लोगों के सामने लाया। बाबासाहेब को अनुसूचित जातियों की आर्थिक स्थिति का पूरा ज्ञान था कि वह केवल सामाजिक प्रतिष्ठा से ही नहीं आर्थिक तौर से भी पूर्णतया वंचित है।

बाबा साहेब ने सन 1940 में सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तथा तथा सामूहिक एवं सरकारी खेती की बात की थी। वो चाहते थे कि सामाजिक और आर्थिक क्रांति के साथ–साथ राज्य निर्माण का काम भी एक साथ चले। इस विचार को मूलभूत अधिकार में तो स्थान नहीं मिला पर राज्य के नीति निर्देष सिध्दांतों में जरूर शामिल किया गया। अतः संविधान में इसका व्यावहारिक दृष्टि से कोई विषेष असर नहीं है। बाबा साहेब मानते थे कि भूमि बंटवारे से दलितों की समस्या हल नहीं होगी इसलिए वो भूमि का राष्ट्रीयकरण चाहते थे।

बाबा साहेब ने 1947 में एक लेख "प्रांत और अल्पसंख्यक" प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने लिखा हमारी समस्या है कि हमारे यहा बिना तानाषाही का राजकीय समाजवाद हो, हमारा समाजवाद संसदीय प्रणाली के साथ हो, और सुझााव दिया कि आर्थिक शोषण को समाप्त करने की दृष्टि से मूल उद्योगों का स्वामित्व और प्रबंध राज्य के हाथ में रहे और बीमा कंपनियों का राष्ट्रीयकरण हो। इसके साथ–साथ ये भी कहा कि खेती में मालिकों, काष्तकारों आदि को मुआवजा देकर राज्य भूमि का अधिग्रहण करें और उस पर सामूहिक खेती की जाए जिससे ना कोई जमींदार होगा, ना कोई काष्तकार और ना कोई भूमिहीन मजदूर।

1938 में बंबई विधानसभा में उन्होंने कहा था कि मुझे अक्सर गलत समझा जाता है। जिसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि मै। अपने देष से प्यार करता हूं लेकिन मैं इस सभा में पूरे जोर शोर से कहना चाहता हूं कि जब कभी देष हित और अस्पृष्यों के हितों के बीच टकराव होगा तो मैं अस्पृष्यों के हितों को जीवनदान दूंगा। मेरे अपने हितों और देष हित के साथ टकराव होगा तो मै देष हित को तरतीह दूंगा।

बाबा साहेब मानते थे कि राज्य तभी लोकतांत्रिक हो सकता है जब समाज भी लोकतांत्रिक हो। आज हमारा समाज मानस अलोकतांत्रिक है। पर राज्य की प्रणाली को

सफल बनाना है तो राष्ट्र मानस और लोक मानस को भी लोकतांत्रिक बनाना होगा। बाबा साहेब राजकीय समाजवाद के पक्षधर थे उन्होंने एक बार रेलवे के मजदूरों को संबोधित करते हुए कहा था कि हमारे दो ही दुष्मन है एक ब्राम्हणवाद और दुसरा पूंजीवाद। गरीब का क्या भविष्य है? क्या इन्हें विधायिका में चुने जाने की आषा है? उनकी आर्थिक उन्नति के लिए कोई ध्यान देने वाला है?

बाबा साहेब ने पूंजीवाद का पूर्ण विरोध किया था। उन्होंने कहा था कि आज देष में बडी जातियों के 100–200 लोग अरब–खरबपति है जो देष की 50 करोड आबादी का शोषण करके पूंजीपति बने है वह चाहे सवर्ण हो या कोई अन्य। कल इसमें से 5–10 दलित लोग पूंजीपति बन जाए तो क्या 12 करोड दलितों का उत्थान हो जाएगा? इससे पता चलता है कि बाबा साहेब आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समानता चाहते थे वे समाजवाद चाहते थे, जो सभी के लिए हो। उनके मानवतावादी दर्षन में भारतीय संस्कृति को नहीं, बल्कि समानता को स्थान प्राप्त है। उन्होंने मानव और समाज के हितों का सर्वोपरि खयाल रखा। इस बात से दिखता है कि बाबा साहेब में भारतीयता और भारतीय आर्थिक व्यवस्था की जानकारी गहराई तक थी वे जानते थे कि परिवर्तनषिलता का गुण विकास के लिए जरुर है इसलिए उन्होंने कहा कि स्थिरता गधे का गुण है घोडे का नहीं। यह दिलचस्प है कि बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने संविधान प्रसारित होने के तत्काल बाद अपने पहले साक्षात्कार में कहा था कि आज हम अंतरविरोध के एक नये युग में प्रवेष कर रहे है। जिसमें राजनैतिक समानता तो होगी यानी एक व्यक्ति–एक वोट पर आर्थिक व सामाजिक समानता नहीं होगी।

डॉ. अम्बेडकर साहेब जी सार्वजनिक क्षेत्र में अनेक बुनियादी उद्योग खोलने के पक्षधर थे। बाबा साहेब ने अपने आर्थिक चिंतन में समाजवादी समाज, योजनाबध्द विकास, कृषि उद्योग, औद्योगिक और सीमित राष्ट्रीयकरण पर जोर दिया, पर आनेवाली संतानों को किसी एक विचारधारा से बांधकर नहीं रखा है क्योंकि बाबा साहेब का मानना था कि समय–समय पर सामाजिक और आर्थिक स्थितियां परिवर्तित होती रहती है। किसी भी स्थिति को स्थाई रुप देना आजादी का हनन है। बाबासाहेब के प्रयासों से ही संविधान बना जिसके अंतर्गत सभी नागरिकों को मूलभूत अधिकार और मताधिकार दिया गया है। बाबा साहेब को इतिहास के साथ–साथ समाज का भी गहरा ज्ञान था। उनकी किताबें– 'शुद्रो की खोज', 'अछूत कौन और कैसे', 'जाति उत्पत्ति का स्वरुप', 'रुपये की समस्या', 'जाति प्रथा का उन्मूलन', 'पाकिस्तान अथवा भारत का विभाजन', 'कॉग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया', 'मि.गांधी और अछुतों का उध्दार', 'साम्प्रदायिक गतिरोध और उनका धम्म' आदि इसका प्रतीक है।

आजादी के बाद जो नीतियॉ रही उनमें बाबासाहेब की विचारधारा मानव विकास के पक्षधर है। इस विकास व उत्थान के लिए मानव स्वयं मार्ग प्रषस्त करेगा। मानव को अपनी

स्वतंत्रता और व्यक्तित्व की सुरक्षा करते हुए सहयोग, सदभाव, समता, करूणा, मैत्री, शांति, परोपकारिता, बंधुत्व और सहभागिता को लेकर चलना होगा।

पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना करते हुए वे सदैव अध्ययन रत रहे। इसके परिणाम स्वरूप वे एक अच्छे वैचारिक लेखक साहित्यकार और तत्ववादी विचारक होकर पूरी दुनिया के सामने आये और फिर संपूर्ण विष्व को मानवता का संदेष दिया। बाबा साहेब ने एक ऐसे समाज की कामना की जिसमें मानव–मानव के नये समाज के अग्रदूत होंगे, जहां श्रम पूजनीय और सेवा प्रतिष्ठित होगी। जो झूठी तथा दम्भी जातीय प्रतिष्ठा की भावना से मुक्त हो।

डॉ. अम्बेडकर साहेब जी में देष प्रेम और राष्ट्रीयता कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे प्रान्तीयता और क्षेत्रवाद के कटु आलोचक थे। 4 अप्रैल 1938 को बम्बई विधानसभा में बोलते हुए उन्होंने कहा था कि मुझे अच्छा नहीं लगता जब कुछ लोग कहते है कि हम पहले भारतीय है और बाद में हिंन्दू अथवा मुसलमान । मुझे यह स्वीकार नहीं। धर्म, जाति भाषा आदि की प्रतिस्पर्धा निष्ठा के रहते हुए भारतीयता के प्रति निष्ठा पनप नहीं सकती है। मैं चाहता हूं कि लोग पहले भी भारतीय हो और अंत तक भारतीय रहे, भारतीय के अलावा कुछ नहीं। डॉ. अम्बेडकर के अन्तःकरण से निकले यह शब्द उनकी राष्ट्रीय निष्ठा की अभिव्यक्ति थी जो बडे–बडे राष्टवादियों में भी मिलना मुष्किल है। बाबासाहेब का जीवन आदि से अंत तक प्रेरणादायक और स्फूर्तिदायक है। उनके जीवन के प्रसंगों को काव्य में उदृत किया जा सकता है। उनका सम्पूर्ण जीवन अपनेआप में एक महाकाव्य है।

पिछले 50–60 वर्षो से समाज की बढी हुई ताकत को एक बार पुनः बटोरकर एकजुट करके बाबासाहेब के सपनों का भारत जिसमें न कोई उॅचा– नीचा हो, न कोई भूखा–नंगा हो, न कोई अषिक्षित हो, न कोई भेदभाववाला। जाति विहिन समाज बनाने के लिए हमे लग जाना होगा अन्यथा इतिहास हमें एक नकारा और गैरजिम्मेदार पीढी के रूप में याद करेगी।

संविधान निर्माण उनकी राष्ट्र की साधना का प्रतीक है उसके लिए सबका सहयोग चाहिए। सिर्फ दलितों–पिछडों का नहीं। डॉ. अम्बेडकर का मिषन देष की एकता, अखण्डता और खुषहाली का है, सारे भारतीय समाज की भलाई का है। उनका मिषन भारतीय समाज को रूढियों, अंधविष्वासों और जडताओं से मुक्त कर उदार, बौध्दिक और वैज्ञानिक समाज बनाने का है। उनके मिषन को पूरा करने की दिषा में किया जानेवाला प्रयत्न ही बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के प्रति सच्ची श्रध्दांजलि होगी।

संदर्भ :

1. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर– अम्बेडकर जीवन और दर्षन पृ. 28–29
2. रूसो
3. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर– अम्बेडकर जीवन और दर्षन पृ. 148
4. हजारी प्रसाद व्दिवेदी – हिन्दी साहित्य उदभव एवं विकास
5. डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर – अम्बेडकर जीवन और दर्षन 143